प्रारंभिक परीक्षा

पीएम वाणी(PM-WANI)

संदर्भ

दूरसंचार विभाग (DoT) ने सार्वजनिक वाई-फाई की पहुंच में सुधार करने, मल्टी-डिवाइस लॉगिन को सरल बनाने और देशव्यापी डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने के लिए पीएम-वाणी (PM-WANI) ढांचे में प्रमुख उपभोक्ता-केंद्रित उन्नयन (अपग्रेड) पेश किए हैं।

पीएम वाणी(PM WANI) के बारे में

- **प्रधानमंत्री वाई-फाई एक्सेस नेटवर्क इंटरफेस (PM-WANI)** एक वितरित, पृथक्कृत (unbundled) वास्तुकला है जिसे डिजिटल इंडिया पहल के तहत देश भर में किफायती, सार्वजनिक ब्रॉडबैंड इंटरनेट के प्रसार के लिए लॉन्च किया गया है।
- **प्रमुख पारिस्थितिकी तंत्र घटक:**
    - **सार्वजनिक डेटा कार्यालय (PDO):** स्थानीय पीसीओ (PCO) बूथों के समान, भौतिक वाई-फाई एक्सेस पॉइंट (हॉटस्पॉट) स्थापित, अनुरक्षित और संचालित करते हैं।
    - **सार्वजनिक डेटा कार्यालय एग्रीगेटर (PDOA):** कई पीडीओ (PDOs) को एकत्रित करते हुए प्राधिकरण और लेखांकन कार्य करता है।
    - **ऐप प्रदाता:** उपयोगकर्ताओं को पंजीकृत करता है और कनेक्शन की सुविधा के लिए आस-पास पीएम-वाणी के अनुकूल हॉटस्पॉट खोजता है।
    - **केंद्रीय रजिस्ट्री:** सभी पारिस्थितिकी तंत्र हितधारकों को पंजीकृत और सत्यापित करने के लिए सी-डॉट (C-DOT) द्वारा अनुरक्षित की जाती है।

हाल के अपडेट

- क्यूआर (QR) आधारित लैपटॉप लॉगिन
- **पाउच-शैली (Sachet-Style) इंटरनेट प्लान:** हॉटस्पॉट ऑपरेटरों को 15, 30 और 60 मिनट के अति-लचीले, कम अवधि के डेटा पैक पेश करने की सलाह दी जाती है।
- **मानकीकृत हॉटस्पॉट नाम (SSIDs):** विशिष्ट "PMWANI" ब्रांडिंग के साथ एक समान नेटवर्क नामकरण अनिवार्य करता है।

भारतीय प्रधानमंत्री ने राजनयिक उपहारों के माध्यम से भारत की जनजातीय विरासत का प्रदर्शन किया

संदर्भ

भारतीय प्रधानमंत्री ने वैश्विक मंच पर भारत की विविध जनजातीय शिल्प कौशल, पारंपरिक हथकरघा और विरासत कृषि को उजागर करते हुए विश्व के नेताओं को विशेष रूप से तैयार किए गए राजनयिक उपहार भेंट किए।

जनजातीय विरासत के बारे में

जनजातीय विरासत	मूल राज्य	संबद्ध जनजातीय समुदाय	प्रमुख विशेषताएँ
गोंड चित्रकला	मध्य प्रदेश	गोंड जनजाति	जीवंत प्राकृतिक रंगों के साथ जटिल बिंदु-और-रेखा पैटर्न का उपयोग करने वाली पारंपरिक जनजातीय कला; विषय लोककथाओं, जंगलों, जानवरों और प्रकृति पूजा पर केंद्रित हैं।
मूंगा रेशम	असम	स्वदेशी बुनकर समुदाय	एंथेरिया असामेंसिस (Antheraea assamensis) रेशम के कीड़े से उत्पादित जीआई-टैग (GI-tagged) जंगली रेशम; अपनी प्राकृतिक सुनहरी चमक, स्थायित्व और असमिया पोशाक में सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है।
शिरुई लिली स्टोल	मणिपुर	तांगखुल नागा जनजाति	दुर्लभ शिरुई लिली (लिलियम मैकलिनिया), जो मणिपुर का राज्य पुष्प है, से प्रेरित हस्तनिर्मित कपड़ा; जनजातीय बुनाई परंपराओं और पुष्प रूपांकनों को दर्शाता है।
चक-हाओ (काला चावल)	मणिपुर	जनजातीय पहाड़ी समुदाय	एंथोसायनिन एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर जीआई-टैग (GI-tagged) सुगंधित चिपचिपा चावल, जो इसे गहरा काला-बैंगनी रंग देता है; पोषण और सांस्कृतिक महत्व के लिए मूल्यवान।

कार्बन-मुक्त सैंडविच अणु(CARBON-FREE SANDWICH MOLECULE)

संदर्भ

आईआईटी मद्रास और आईआईएससी बेंगलुरु के शोधकर्ताओं ने दुनिया का पहला पूरी तरह से कार्बन-मुक्त "सैंडविच" अणु बनाया है, जिसे 'साइंस' पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। यह फेरोसीन (ferrocene) की संरचना की प्रतिकृति है।

फेरोसीन के बारे में

- फेरोसीन (1950 के दशक में खोजा गया) एक "सैंडविच" अणु है जहां एक एकल लोहे का परमाणु दो चपटे कार्बन वलयों (rings) के बीच स्थित होता है।
- 70 से अधिक वर्षों तक, वैज्ञानिकों ने इस बात पर बहस की कि क्या ऐसी स्थिर सैंडविच संरचनाएं केवल कार्बन वलयों के लिए अद्वितीय थीं, या क्या अन्य तत्व उनकी प्रतिकृति बना सकते हैं।

दुनिया के पहले कार्बन-मुक्त सैंडविच अणु के बारे में

- भारतीय टीम ने फेरोसीन के प्रत्येक घटक को प्रतिस्थापित किया:
  - केंद्रीय परमाणु: ऑस्मियम ने लोहे की जगह ली।
  - पार्श्व वलय: चपटे, बोरॉन-आधारित वलय पारंपरिक कार्बन वलयों की जगह लेते हैं।
- महत्व
  - फेरोसीन की तुलना में अधिक मजबूत बंधन, जो इसे संरचनात्मक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाते हैं
  - नवीन उन्नत सामग्रियों के लिए द्वार खोलता है

- दवा वितरण, इलेक्ट्रॉनिक्स और बैटरी में संभावित भविष्य का उपयोग

भारत की पहली भू-तापीय बिजली परियोजना(INDIA'S FIRST GEOTHERMAL POWER PROJECT)

संदर्भ

ओएनजीसी को पुगा घाटी, लद्दाख में भारत की पहली भूतापीय बिजली परियोजना स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञापन के विस्तार के लिए मंजूरी मिली।

परियोजना के बारे में

- **स्थान:** पुगा घाटी में 1-मेगावाट पायलट भूतापीय बिजली संयंत्र।
- **त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन:** लद्दाख प्रशासन, एलएएचडीसी लेह और ओएनजीसी ऊर्जा केंद्र के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- **वाणिज्यिक विकास:** बड़े पैमाने पर भू-तापीय दोहन के लिए डीपीआर तैयार किया जाएगा।
- **चुमाथांग विस्तार:** चुमाथांग क्षेत्र में आगे के भू-तापीय सर्वेक्षण की योजना बनाई गई है।

पुगा घाटी

- **स्थान:** पूर्वी लद्दाख में 14,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित है।
- **भूतापीय बेल्ट:** विवर्तनिक रूप से सक्रिय हिमालयी भू-तापीय बेल्ट के भीतर स्थित है।
- **हॉट स्प्रिंग्स:** यह क्षेत्र सल्फर युक्त गर्म झरनों और भूतापीय अभिव्यक्तियों के लिए जाना जाता है।
- **उच्च तापमान जलाशय:** परीक्षण कुओं ने उथली गहराई पर 200 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तापमान दर्ज किया।

भूतापीय ऊर्जा में भारत की स्थिति

- **बड़ी क्षमता:** भारत ने लगभग 10,000 मेगावाट की भू-तापीय क्षमता का अनुमान लगाया है।
- **भू-तापीय स्थल:** भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने लगभग 350 भू-तापीय झरने स्थानों की पहचान की है।
- **प्रमुख स्थान:** पुगा और चुमाथांग (लद्दाख), मणिकरण (हिमाचल प्रदेश), कैम्बे बेसिन (गुजरात) और तत्तापानी (छत्तीसगढ़)।
    - **सोनाटा बेल्ट:** सोन-नर्मदा-ताप्ती क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भू-तापीय प्रांत है।
- **कोई वाणिज्यिक संयंत्र नहीं:** भारत में वर्तमान में बड़े पैमाने पर परिचालन वाले भू-तापीय बिजली संयंत्र की कमी है

प्रातस द्वीप (PRATAS ISLANDS)

संदर्भ

दक्षिण चीन सागर में ताइवान के तट रक्षक बल के साथ तनावपूर्ण गतिरोध के बाद हाल ही में एक चीनी तट रक्षक पोत प्रातस द्वीप के पास के जलक्षेत्र से चला गया।

प्रातस द्वीप के बारे में

- **वैकल्पिक नाम:** इसे डोंगशा द्वीप (Dongsha Islands) के नाम से भी जाना जाता है।
- **स्थान:** उत्तरी दक्षिण चीन सागर में, हांगकांग के दक्षिण-पूर्व और ताइवान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- **प्रशासन:** ताइवान द्वारा शासित और नियंत्रित।
- **पड़ोसी जलक्षेत्र:** पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री मार्गों के पास स्थित है।
- **रणनीतिक महत्व:** दक्षिण चीन सागर में समुद्री निगरानी और नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है।
- **विवाद**: चीन द्वारा दावा किया गया और ताइवान द्वारा प्रशासित।

दक्षिण चीन सागर में विवादित द्वीप

विवादित क्षेत्र / द्वीप	दक्षिण चीन सागर में स्थान	दावेदार	वर्तमान नियंत्रण
स्प्रैटली द्वीप (Spratly Islands)	मध्य दक्षिण चीन सागर	चीन, ताइवान, वियतनाम, फिलीपींस, मलेशिया, ब्रुनेई	कई दावेदार अलग-अलग भू-आकृतियों (features) पर काबिज हैं
पारसेल द्वीप (Paracel Islands)	उत्तरी दक्षिण चीन सागर	चीन, वियतनाम, ताइवान	चीन
स्कारबोरो शोल (Scarborough Shoal)	फिलीपींस के पास पश्चिमी दक्षिण चीन सागर	चीन, फिलीपींस	चीन
नातुना जलक्षेत्र (Natuna Waters)	इंडोनेशिया के पास दक्षिणी दक्षिण चीन सागर	चीन की नाइन-डैश लाइन इंडोनेशिया के ईईजेड (EEZ) के साथ ओवरलैप करती है	इंडोनेशिया

अति-निम्न तापमान मापन(ULTRA-LOW TEMPERATURE MEASUREMENT)

संदर्भ

शीत परमाणु भौतिकी (cold atom physics) और बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (BEC) प्रयोगों में हालिया प्रगति ने अति-निम्न तापमान को मापने की तकनीकों को उजागर किया है।

अति-निम्न तापमान पर मापन

- **पैमाना**: अति-निम्न तापमान केल्विन (K) में मापा जाता है, जहाँ 0 K परम शून्य का प्रतिनिधित्व करता है। ○ 0 K, –273.15°C के बराबर है, जो परमाणुओं की न्यूनतम संभव तापीय गति को दर्शाता है।
- **मापन चुनौती:**
    - **पारंपरिक सीमा:** पारा और अर्धचालक (semiconductor) थर्मामीटर अत्यधिक कम तापमान पर अप्रभावी हो जाते हैं।
    - **गुणों में परिवर्तन:** मापने वाली सामग्रियों के भौतिक और विद्युत गुण परम शून्य के निकट काफी बदल जाते हैं।
    - **क्वांटम प्रभाव:** परमाणु अति-निम्न तापमान पर क्वांटम यांत्रिक व्यवहार प्रदर्शित करना शुरू कर देते हैं।
- **शीत परमाणु भौतिकी:** भौतिकी की वह शाखा जो परम शून्य के करीब ठंडे किए गए परमाणुओं का अध्ययन करती है।

बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (BEC) के बारे में

- **परिभाषा**: पदार्थ की विदेशी (exotic) अवस्था जो तब बनती है जब बोसोनिक परमाणुओं को परम शून्य के अत्यंत निकट तापमान तक ठंडा किया जाता है।
- **बोसॉन और फर्मियन:** परमाणुओं को मोटे तौर पर फर्मियन और बोसॉन में वर्गीकृत किया जाता है; बोसॉन एक साथ समान क्वांटम अवस्था में रह सकते हैं जो फर्मियन नहीं कर सकते।
    - बोसॉन का नाम सत्येंद्र नाथ बोस के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 1924 में सैद्धांतिक रूप से उनके सांख्यिकीय व्यवहार की भविष्यवाणी की थी।
    - BEC में, बड़ी संख्या में परमाणु सामूहिक रूप से एक एकल क्वांटम इकाई के रूप में व्यवहार करते हैं।
- **प्रायोगिक उपलब्धि:** पहली बार 1995 में अति-शीत रूबिडियम परमाणुओं का उपयोग करके प्रयोगात्मक रूप से प्राप्त किया गया।
- **नोबेल पुरस्कार:** एरिक ए. कॉर्नेल, वोल्फगैंग केटरले और कार्ल ई. वीमन को बीईसी (BEC) प्रयोगों के लिए भौतिकी में 2001 का नोबेल पुरस्कार मिला।
    - उन्होंने लगभग 20 नैनोकेल्विन (nK) का तापमान प्राप्त किया, जहाँ 1 nK = 10^{-9} केल्विन, जो 0 K के निकट है।
- **अनुप्रयोग**: क्वांटम कंप्यूटिंग, प्रिसिजन सेंसिंग (सटीक संवेदन), परमाणु घड़ियों और क्वांटम यांत्रिकी अनुसंधान में उपयोग किया जाता है।

सिडबी एमएसएमई (SIDBI MSME) पहल

संदर्भ

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एमएसएमई (MSMEs) और ग्रामीण उद्यमों को मजबूत करने के लिए नई सिडबी पहलों की शुरुआत की।

प्रमुख पहल

- **मैकफिन मार्ट (MachFin Mart):** डिजिटल मार्केटप्लेस जो एमएसएमई को पारदर्शी मूल्य निर्धारण और प्रौद्योगिकी समर्थन के साथ मशीनरी तक पहुंचने में सक्षम बनाता है।
- **आरआरबी सह-उधार पोर्टल (RRB Co-Lending Portal):** ग्रामीण एमएसएमई वित्तपोषण के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के साथ सिडबी की साझेदारी को बढ़ाता है।
- **मोर कार्यक्रम (MoRE Programme):** 10,000 ग्रामीण और कारीगर उद्यमों के आधुनिकीकरण के लिए क्लस्टर-आधारित समर्थन।

महत्व

- **प्रौद्योगिकी अपनाना:** एमएसएमई आधुनिकीकरण और उत्पादकता वृद्धि को प्रोत्साहित करता है।
- **वित्तीय समावेशन:** वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत ऋण पहुंच का विस्तार

मुख्य परीक्षा

वित्त आयोग के हस्तांतरण और समता का मुद्दा

संदर्भ

16वें वित्त आयोग के लिए विचार-विमर्श ने लगातार क्षेत्रीय असमानताओं और न्यायसंगत पुनर्वितरण की मांगों के बीच कर हस्तांतरण (tax devolution) पर विवादों को फिर से जीवित कर दिया है।

राजकोषीय संघवाद के केंद्र में वित्त आयोग

- **संवैधानिक संतुलन:** वित्त आयोग संवैधानिक तंत्र के रूप में कार्य करता है जो विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करते हुए संघ और राज्यों के बीच राजकोषीय शक्तियों को संतुलित करता है।
- **ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण**: हालांकि 15वें वित्त आयोग ने राज्यों को 41% कर हस्तांतरण को बरकरार रखा है, लेकिन केंद्र द्वारा उपकर और अधिभार के बढ़ते उपयोग ने राज्यों के लिए उपलब्ध वास्तविक हस्तांतरणीय पूल को कम कर दिया है।
- **समता-दक्षता संघर्ष:** आय दूरी जैसे पुनर्वितरण मानदंड गरीब राज्यों के पक्ष में हैं, जबकि आर्थिक रूप से उन्नत दक्षिणी राज्यों का तर्क है कि इस तरह के सूत्र राजकोषीय विवेक और जनसांख्यिकीय सफलता को दंडित करते हैं।
- **राजकोषीय निर्भरता:** जीएसटी कार्यान्वयन, बढ़ते ऋण बोझ और सख्त राजकोषीय घाटे के मानदंडों ने व्यय प्रतिबद्धताओं को बनाए रखने के लिए वित्त आयोग हस्तांतरण पर राज्यों की निर्भरता को बढ़ा दिया है।
- **केंद्रीकृत व्यय पैटर्न:** केंद्र प्रायोजित योजनाओं के विस्तार ने राज्यों को केंद्र द्वारा निर्धारित प्राथमिकताओं के लिए मिलान संसाधनों को आवंटित करने के लिए मजबूर करके राजकोषीय स्वायत्तता को कम कर दिया है।

राजकोषीय हस्तांतरण में संरचनात्मक कमजोरियां

- **सिकुड़ता विभाज्य पूल:** उपकर और अधिभार अब सकल कर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा हैं और विभाज्य पूल से बाहर रहते हैं, जिससे राज्यों की प्रभावी राजकोषीय हिस्सेदारी कम हो जाती है।
- **सीमित राजकोषीय विकेंद्रीकरण:** प्राकृतिक संसाधनों, परिसंपत्ति मुद्रीकरण और आरबीआई अधिशेष हस्तांतरण से प्राप्त आय सहित महत्वपूर्ण गैर-कर राजस्व केंद्र के पास केंद्रित रहता है।
- **जीएसटी-प्रेरित बाधाएं:** जीएसटी के बाद राजकोषीय पुनर्गठन ने राज्यों की स्वतंत्र कराधान क्षमता को कमजोर किया और राजस्व सृजन में लचीलापन कम किया।
- **ऋण प्रतिबंध**: विकासात्मक और कल्याणकारी दायित्वों के विस्तार के बावजूद राज्यों को कड़े राजकोषीय अनुशासन और उधार मानदंडों का सामना करना पड़ता है।
- **लागत-साझाकरण बोझ:** मनरेगा जैसी योजनाओं में संशोधित वित्त पोषण संरचनाओं ने उच्च लागत-साझाकरण आवश्यकताओं के माध्यम से राज्यों की व्यय जिम्मेदारियों को बढ़ा दिया है।
- **अधिक हस्तांतरण की मांग:** कई राज्यों ने राजकोषीय स्थान में गिरावट और बढ़ते व्यय दबाव के जवाब में ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण को 50% तक बढ़ाने की मांग की है।

अंतरराज्यीय समता गतिशीलता

- **विकसित होते वितरण मानदंड:** क्रमिक वित्त आयोगों में हस्तांतरण संकेतकों को दिए गए भारांक में लगातार बदलाव ने राज्यों के बीच अनिश्चितता पैदा की है।
- **आय की दूरी पर बहस:** राज्यों ने आय की दूरी पर अत्यधिक निर्भरता पर सवाल उठाया है और क्रय शक्ति और क्षेत्रीय लागत भिन्नताओं के लिए समायोजन की वकालत की है।
- **पुनर्वितरण बदलाव**: 16वें वित्त आयोग की संशोधित गणना के तहत बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की सामूहिक हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- **दक्षिणी हिस्से में गिरावट:** आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु की राजकोषीय हिस्सेदारी में तेजी से गिरावट आई, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन के बारे में चिंताएं बढ़ गईं।
- **प्रोत्साहन विरूपण:** बिना शर्त समानीकरण हस्तांतरण पर अत्यधिक निर्भरता प्राप्तकर्ता राज्यों के बीच कर जुटाने और राजकोषीय अनुशासन के लिए प्रोत्साहन को कमजोर कर सकती है।

सार्वजनिक सेवा वितरण अंतराल

- **क्षेत्रीय व्यय असमानताएँ**: दशकों के राजकोषीय पुनर्वितरण के बावजूद प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य और शिक्षा व्यय में बड़ा अंतर बना हुआ है।
- **प्रशासनिक क्षमता की कमी**: वित्तीय रूप से कमजोर राज्यों में अक्सर हस्तांतरित संसाधनों को प्रभावी ढंग से अवशोषित करने और उपयोग करने के लिए संस्थागत और प्रशासनिक क्षमता की कमी होती है।
- **इनपुट-उन्मुख आवंटन:** राजकोषीय हस्तांतरण मापने योग्य सेवा गुणवत्ता या शासन परिणामों के बजाय व्यय इनपुट से बहुत अधिक जुड़ा रहता है।
- **कठोर सशर्त वित्तपोषण:** एक समान केंद्र प्रायोजित योजना दिशानिर्देश राज्यों को क्षेत्रीय विकास आवश्यकताओं के अनुसार व्यय को अपनाने से रोकते हैं।
- **राजस्व व्यय पूर्वाग्रह**: हस्तांतरित धन का एक बड़ा हिस्सा वेतन, पेंशन और आवर्ती व्यय द्वारा अवशोषित किया जाता है, जिससे बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए सीमित पूंजी बचती है।
- **विभेदक वितरण लागत**: इलाके में भिन्नता, जनसंख्या घनत्व और बुनियादी ढांचे की कमी राज्यों में तुलनीय सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने की लागत को बढ़ाती है।
- **कमजोर परिणाम अभिविन्यास**: मौजूदा हस्तांतरण ढांचे शासन दक्षता और सेवा वितरण परिणामों में मापने योग्य सुधारों पर पुनर्वितरण को प्राथमिकता देते हैं।

पंद्रहवें वित्त आयोग के सुधार

- **राज्यों की हिस्सेदारी बरकरार रखना:** 15वें वित्त आयोग ने केंद्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी 41% पर बरकरार रखी।
- **अनुदानों का युक्तिकरण:** संशोधित ढांचे के तहत राजस्व घाटा अनुदान, क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान और राज्य-विशिष्ट अनुदान बंद कर दिए गए थे।

- **राजकोषीय समेकन उपाय: राज्यों को** सलाह दी गई कि वे ऑफ-बजट उधारों पर अंकुश लगाएं, देनदारियों को औपचारिक बजट में एकीकृत करें और राजकोषीय घाटे को जीएसडीपी के 3% से नीचे बनाए रखें।
- **हस्तांतरण भारांक संरचना:** आयोग ने आय की दूरी, जनसंख्या, वन आवरण, जनसांख्यिकीय प्रदर्शन और जीडीपी योगदान को प्रमुख भारांक सौंपा।
- **वर्गमूल जीएसडीपी सूत्र:** GSDP शेयरों के वर्गमूल परिवर्तन (square-root transformation) को अपनाने से आर्थिक रूप से मजबूत राज्यों का सापेक्ष लाभ कम हो गया।
- **उन्नत राज्यों की कम हिस्सेदारी**: महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक में उनके समग्र हस्तांतरण हिस्से में उल्लेखनीय कमी देखी गई।
- **छोटे राज्यों के लिए लाभ:** कई छोटे और वित्तीय रूप से कमजोर राज्यों को संशोधित फॉर्मूले के तहत तुलनात्मक रूप से अधिक आवंटन प्राप्त हुआ।

वैकल्पिक हस्तांतरण मॉडल

- **जीडीपी-आधारित भारांक:** जीडीपी योगदान को सौंपे गए भारांक को बढ़ाने से आर्थिक रूप से उन्नत राज्यों की राजकोषीय हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।
- **समान भारांक ढांचा:** एक समान-भारांक आवंटन सूत्र औद्योगीकृत और उच्च प्रदर्शन वाले राज्यों की हिस्सेदारी में और सुधार करेगा।
- **वास्तविक जीएसडीपी मानदंड:** वर्गमूल परिवर्तन के बजाय वास्तविक जीएसडीपी शेयरों का उपयोग करने से प्रमुख योगदानकर्ता राज्यों को काफी लाभ होगा।
- **राजकोषीय निहितार्थ:** वैकल्पिक सूत्र महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों के लिए महत्वपूर्ण वार्षिक राजकोषीय लाभ उत्पन्न कर सकते हैं।

समता और दक्षता प्रतिमान

- **पुनर्वितरण न्याय:** समता सिद्धांत आर्थिक रूप से कमजोर राज्यों को वित्तीय सहायता के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने का प्रयास करता है।
- **प्रदर्शन प्रोत्साहन**: दक्षता सिद्धांत राज्यों को मजबूत कर प्रयास, जनसांख्यिकीय प्रबंधन और राजकोषीय विवेक का प्रदर्शन करने वाले पुरस्कृत करता है।
- **राजनीतिक अर्थव्यवस्था की चिंताएं**: बड़े संसदीय प्रतिनिधित्व वाले राज्यों को अक्सर कमजोर राजकोषीय प्रदर्शन संकेतकों के बावजूद उच्च हस्तांतरण प्राप्त करने के लिए माना जाता है।
- **परिसीमन की चिंता:** दक्षिणी राज्यों को डर है कि जनसांख्यिकीय सफलता राजनीतिक प्रतिनिधित्व को कम कर सकती है, जबकि राजकोषीय पुनर्वितरण आबादी वाले राज्यों के पक्ष में जारी है।
- **सहकारी संघवाद चुनौती:** भविष्य के वित्त आयोगों को समानता और संघीय विश्वास दोनों को बनाए रखने के लिए प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहनों के साथ पुनर्वितरण न्याय को संतुलित करना चाहिए।

भारत में बुजुर्गों की बढ़ती आबादी और बुजुर्गों की देखभाल

संदर्भ

केरल ने भारत की तेजी से बुजुर्ग होती जनसांख्यिकी के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया का संकेत देते हुए, भारत का पहला समर्पित 'बुजुर्ग कल्याण विभाग' (Department for the Welfare of Elderly People) स्थापित किया है।

भारत में बुजुर्गों की आबादी की स्थिति

संकेतक	डेटा
बुजुर्ग आबादी (60+)- राष्ट्रीय	कुल आबादी का 10.1% (2021)
बुजुर्ग आबादी (60+)- केरल	16.9% (भारत का सबसे तेजी से बुजुर्ग होता राज्य)
कुल प्रजनन दर (केरल)	1.35 — 2.1 के प्रतिस्थापन स्तर से नीचे
बुजुर्ग लिंगानुपात (2026 तक अनुमानित)	प्रति 1,000 पुरुषों पर 1,060 महिलाएं (उम्र बढ़ने का नारीकरण)
पुरानी बीमारी वाले बुजुर्ग	75% कम से कम एक पुरानी बीमारी से पीड़ित हैं (LASI)
2050 तक अनुमानित बुजुर्ग	~34.7 करोड़ (महत्वपूर्ण नीतिगत चुनौती)

भारत में बुजुर्गों की देखभाल की आवश्यकता

- **"सिल्वर डिविडेंड" का उपयोग करना:** वरिष्ठ नागरिकों के पास अपार पेशेवर अनुभव, संस्थागत स्मृति और सांस्कृतिक ज्ञान होता है। समाज में उनकी स्वस्थ और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने से उन्हें परामर्श, सामुदायिक मार्गदर्शन और अंशकालिक आर्थिक जुड़ाव के माध्यम से मूल्यवान योगदानकर्ताओं में बदल दिया जा सकता है।
- **अंतरपीढ़ीगत बंधनों को मजबूत करना**: बुजुर्ग नागरिक सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने और पीढ़ियों में नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवारों में, दादा-दादी अक्सर युवा सदस्यों को भावनात्मक समर्थन, स्थिरता और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- **सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देना:** पुरानी पीढ़ियों का सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक परिपक्वता समाज के भीतर असहिष्णुता, सामाजिक विखंडन और हिंसक प्रवृत्तियों को कम करने में मदद करती है।
- **कामकाजी उम्र की आबादी पर बोझ कम करना**: संस्थागत बुजुर्ग-देखभाल बुनियादी ढांचे जैसे सहायक रहने की सुविधाओं, प्रशिक्षित देखभाल करने वालों और डे-केयर सेंटरों के अभाव में, देखभाल करने की जिम्मेदारियां काफी हद तक परिवार के सदस्यों पर आती हैं।
- **नैतिक जिम्मेदारी**: बुजुर्गों की देखभाल प्रदान करना उन व्यक्तियों के प्रति समाज के दायित्व का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने अपने पूरे जीवन में शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक रूप से योगदान दिया है।

- **संवैधानिक प्रतिबद्धता:** भारतीय संविधान का अनुच्छेद 41 राज्य को बुढ़ापे, बीमारी और विकलांगता के मामलों में सार्वजनिक सहायता सुनिश्चित करने का निर्देश देता है। इसलिए बुजुर्गों की देखभाल सामाजिक कल्याण की संवैधानिक दृष्टि का हिस्सा है।

बुजुर्ग आबादी के समक्ष चुनौतियाँ

- **सामाजिक अलगाव और उपेक्षा**: शहरीकरण, एकल परिवार, प्रवासन और बदलते सामाजिक मूल्यों ने पारंपरिक समर्थन संरचनाओं को तेजी से कमजोर कर दिया है, जिससे बुजुर्ग नागरिकों की उपेक्षा हो रही है।
- **बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार:** वरिष्ठ नागरिकों को अक्सर शारीरिक, भावनात्मक, वित्तीय और मनोवैज्ञानिक शोषण का सामना करना पड़ता है। भावनात्मक उपेक्षा और मौखिक अपमान उनकी गरिमा और मानसिक कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।
- **जाति-आधारित कमजोरियां:** निचली जाति के बुजुर्ग अक्सर वित्तीय आवश्यकता के कारण बुढ़ापे में काम करना जारी रखते हैं, जबकि उच्च जाति के वरिष्ठ नागरिकों को व्यावसायिक अवसरों में गिरावट के कारण पहचान और आत्म-मूल्य के नुकसान का अनुभव हो सकता है।
- **बुजुर्ग महिलाओं की बढ़ती आबादी:** भारत में बुढ़ापा तेजी से नारीकृत हो गया है। आधी से अधिक बुजुर्ग महिलाएं विधवा हैं, जो उन्हें आर्थिक निर्भरता, सामाजिक बहिष्कार, संपत्ति के अभाव और लिंग आधारित भेदभाव के प्रति संवेदनशील बनाती हैं।
- **पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा का अभाव:** भारत का लगभग 90% कार्यबल अनौपचारिक क्षेत्र में काम करता है, जिससे अधिकांश नागरिकों के लिए पेंशन और सेवानिवृत्ति लाभों तक पहुंच सीमित हो जाती है।
- **कमजोर पेंशन सहायता:** सरकारी पेंशन व्यय सीमित रहता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना जैसी मौजूदा योजनाओं की अक्सर अपर्याप्त वित्तीय सहायता के लिए आलोचना की जाती है।
- **आवास और बुनियादी सुविधाएं:** कई बुजुर्ग व्यक्तियों के पास उम्र के अनुकूल आवास, सुलभ बुनियादी ढांचे और उनकी शारीरिक जरूरतों के लिए उपयुक्त आवश्यक सुविधाओं की कमी होती है।
- **पुरानी बीमारियों का बोझ:** लॉन्गिट्यूडिनल एजिंग स्टडी इन इंडिया (एलएएसआई) के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि लगभग तीन-चौथाई वरिष्ठ नागरिक कम से कम एक पुरानी बीमारी जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गठिया या हृदय संबंधी विकारों से पीड़ित हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे**: अवसाद, चिंता, मनोभ्रंश और अल्जाइमर रोग बुजुर्ग नागरिकों के एक महत्वपूर्ण अनुपात को प्रभावित करते हैं। सामाजिक कलंक और प्रशिक्षित वृद्धावस्था विशेषज्ञों की कमी समस्या को बढ़ाती है।

बुजुर्गों की देखभाल के लिए सरकारी पहल

योजना / नीति	प्रमुख प्रावधान
माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007	प्रति जिले में वृद्धाश्रम अनिवार्य; गैर-रखरखाव के लिए दंडात्मक प्रावधान; उपेक्षा पर संपत्ति निरस्तीकरण
वृद्ध व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति (2011)	आय सुरक्षा, होम केयर, स्वास्थ्य बीमा, आयु-अनुकूल वातावरण

प्रधानमंत्री वय वंदना योजना	वरिष्ठ नागरिकों की आय सुरक्षा के लिए सुनिश्चित पेंशन/रिटर्न योजना
राष्ट्रीय वयोश्री योजना	बीपीएल वरिष्ठ नागरिकों के लिए शारीरिक सहायता और जीवन-यापन में सहायक उपकरण
सेज (SAGE) पहल	बुजुर्गों की देखभाल के लिए नवीन उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देती है
संपन्न (SAMPANN) परियोजना	दूरसंचार पेंशनभोगियों के लिए ऑनलाइन पेंशन प्रसंस्करण प्रणाली
सेक्रेड (SACRED) पोर्टल	60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों के लिए नौकरी के अवसर
वरिष्ठ नागरिकों के लिए राष्ट्रीय परिषद	वरिष्ठ कल्याण पर केंद्र और राज्य सरकारों के लिए सलाहकार निकाय

आगे की राह

- **देखभाल करने वाली अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाना**: भारत को देखभाल करने वालों के लिए काम करने की स्थिति, प्रशिक्षण और सामाजिक मान्यता में सुधार करके देखभाल करने को एक औपचारिक आर्थिक गतिविधि के रूप में पहचानना चाहिए।
- **पेंशन सुधार:** वृद्धावस्था पेंशन को नियमित रूप से संशोधित किया जाना चाहिए और बुनियादी गरिमा और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मुद्रास्फीति से जोड़ा जाना चाहिए।
- **वृद्धावस्था स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करना:** सभी चिकित्सा संस्थानों में समर्पित वृद्धावस्था विभाग और विशेष स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचा स्थापित किया जाना चाहिए।
- **अभिनव मॉडल अपनाना**: भारत स्विट्जरलैंड की "टाइम बैंक" प्रणाली जैसी पहलों को अपना सकता है, जहां युवा व्यक्ति वरिष्ठ नागरिकों की सहायता करके भविष्य की देखभाल क्रेडिट अर्जित करते हैं।
- **सिल्वर इकोनॉमी को बढ़ावा देना:** सरकार को बुजुर्गों के अनुकूल प्रौद्योगिकियों, सहायक उपकरणों और विशेष रहने की सुविधाओं को विकसित करने वाले स्टार्टअप और निजी उद्यमों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** निजी स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों को विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वृद्धावस्था देखभाल केंद्र स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- **वृद्धावस्था के नारीकरण को संबोधित करना:** नीतियों को संपत्ति के अधिकार, उत्तरजीवी पेंशन, स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और शोषण से सुरक्षा सुनिश्चित करके बुजुर्ग महिलाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **सब्सिडी और निवेश को युक्तिसंगत बनाना:** वृद्ध राज्यों को बढ़ती पेंशन देनदारियों को समायोजित करने के लिए सब्सिडी को तर्कसंगत बनाने की आवश्यकता हो सकती है, जबकि युवा राज्यों को मानव पूंजी विकास में निवेश करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच भारत का बढ़ता उर्वरक आयात बिल

संदर्भ

पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति व्यवधान और मुद्रा मूल्यह्रास के कारण उर्वरक आयात भारत के लिए एक प्रमुख आर्थिक और रणनीतिक चिंता का विषय बनता जा रहा है।

भारत में उर्वरक आयात की वर्तमान स्थिति

- **उर्वरक आयात बिल:**
  - $24.16 बिलियन (2021-22)
  - $33.42 बिलियन (2022-23 रिकॉर्ड उच्च)
  - $21.07 बिलियन (2023-24)
  - $20.92 बिलियन (2024-25)
  - $27.17 बिलियन अनुमानित (2025-26)
- **2025-26 में आयात:**
  - 28.2 मिलियन टन (एमटी) उर्वरक जिनमें शामिल हैं:
    - 11.2 मिलियन टन यूरिया
    - 6.4 मिलियन टन डीएपी
    - 3.7 मिलियन टन एमओपी

बढ़ते आयात बिल के कारण

- **बढ़ती अंतरराष्ट्रीय कीमतें:** रूस-यूक्रेन और पश्चिम एशिया में संघर्ष के कारण वैश्विक उर्वरक की कीमतों में काफी वृद्धि हुई है। ऊर्जा की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने विनिर्माण और परिवहन लागत को और बढ़ा दिया है।
- **रुपये का मूल्यह्रास बढ़ती लागत:** चूंकि उर्वरक व्यापार बड़े पैमाने पर अमेरिकी डॉलर में होता है, इसलिए रुपये के मूल्यह्रास से आयात लागत बढ़ जाती है, भले ही मात्रा अपरिवर्तित रहती है।
- **रुपया लगभग ₹85.2/$ से लगभग ₹95.2/$ तक कमजोर हो गया:** इससे उर्वरकों की लैंडिंग लागत बढ़ जाती है और अंततः सरकार द्वारा वहन किए जाने वाले सब्सिडी व्यय में वृद्धि होती है।

भारत के लिए उर्वरक आयात क्यों मायने रखता है

- **खाद्य सुरक्षा:** कृषि उत्पादकता बनाए रखने और भारत की बड़ी आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उर्वरक आवश्यक हैं। किसी भी कमी का सीधा असर फसल की पैदावार और खाद्य कीमतों पर पड़ सकता है।
- **कृषि विकास:** भारत की गहन कृषि प्रणाली उच्च उत्पादकता स्तर को बनाए रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों पर बहुत अधिक निर्भर करती है।
- **मूल्य स्थिरता:** सब्सिडी वाले उर्वरक किसानों के लिए इनपुट लागत को कम करने और खाद्य मुद्रास्फीति में तेज वृद्धि को रोकने में मदद करते हैं। कम खेती की लागत भी सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) का समर्थन करती है।

भारत के उर्वरक क्षेत्र में चुनौतियाँ

- **भू-राजनीतिक भेद्यता:** पश्चिम एशिया में संघर्ष और रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक स्तर पर शिपिंग मार्गों, ऊर्जा आपूर्ति और उर्वरक व्यापार प्रवाह को बाधित कर दिया है।
    - होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक चोकपॉइंट असुरक्षित रहते हैं, जिससे आपूर्ति में व्यवधान और मूल्य वृद्धि का जोखिम बढ़ जाता है।
- **अत्यधिक आयात निर्भरता:** उर्वरकों और कच्चे माल के लिए आयात पर भारत की अत्यधिक निर्भरता दीर्घकालिक रणनीतिक और आर्थिक कमजोरियां पैदा करती है।
- **सब्सिडी का बढ़ता बोझ:** उच्च आयात कीमतों से सरकार के उर्वरक सब्सिडी व्यय में वृद्धि होती है क्योंकि किसानों के लिए खुदरा कीमतें नियंत्रित रहती हैं।
- **मुद्रा जोखिम:** कमजोर रुपया आयात को महंगा बनाता है, भले ही अंतरराष्ट्रीय कीमतें स्थिर रहें। इससे सब्सिडी योजना और बजट में अतिरिक्त अनिश्चितता पैदा होती है।
- **आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान:** वैश्विक शिपिंग व्यवधान, माल ढुलाई लागत में वृद्धि और उत्पादक देशों द्वारा निर्यात प्रतिबंध महत्वपूर्ण बुवाई के मौसम के दौरान उर्वरक की उपलब्धता में देरी कर सकते हैं।

उर्वरक क्षेत्र में सरकार की पहल

- **पोषक तत्व सब्सिडी:** पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एनबीएस) योजना पीएंडके उर्वरकों के लिए निश्चित सहायता प्रदान करती है, जिससे संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग को बढ़ावा मिलता है।
- **ओएनओएफ योजना**: एक राष्ट्र एक उर्वरक पारदर्शिता और गुणवत्ता के लिए 'भारत' के तहत ब्रांडिंग को मानकीकृत करता है।
- **नैनो उर्वरक:** कुशल पोषक तत्वों के उपयोग के लिए नैनो यूरिया, नैनो डीएपी और नीम-लेपित यूरिया को बढ़ावा देता है।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म:** iFMS (एकीकृत उर्वरक प्रबंधन प्रणाली) और mFMS (मोबाइल उर्वरक प्रबंधन प्रणाली) उर्वरक आपूर्ति को ट्रैक करते हैं और किसानों के लिए वास्तविक समय तक पहुंच को सक्षम करते हैं।
- **पीएम-प्रणाम योजना: इसका** उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करना और संतुलित पोषक तत्वों के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करना है।

आगे की राह

- **आयात स्रोतों का विविधीकरण:** भारत को भू-राजनीतिक और आपूर्ति श्रृंखला जोखिमों को कम करने के लिए कई देशों में उर्वरक आयात में विविधता लानी चाहिए।
- **घरेलू विनिर्माण को मजबूत करना:** यूरिया संयंत्रों, फॉस्फेटिक उर्वरकों और वैकल्पिक उर्वरक प्रौद्योगिकियों में अधिक निवेश की आवश्यकता है।
- **संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग को बढ़ावा देना:** मृदा स्वास्थ्य कार्ड, सटीक खेती, फर्टिगेशन और सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन के माध्यम से यूरिया पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया जाना चाहिए।

- **रणनीतिक उर्वरक भंडार:** भारत को अस्थायी वैश्विक व्यवधानों का प्रबंधन करने के लिए प्रमुख उर्वरकों और कच्चे माल के रणनीतिक भंडार को बनाए रखना चाहिए।

निष्कर्ष

"भारतीय कृषि का भविष्य केवल खाद्य उत्पादन पर ही नहीं, बल्कि उत्पादन को संभव बनाने वाले इनपुट को सुरक्षित करने पर भी निर्भर करता है।"

रुपये का मूल्यह्रास

संदर्भ

भारतीय रुपया हाल ही में 96-प्रति-डॉलर के निशान को पार कर एक नए रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गया है। फरवरी के अंत में ईरान-अमेरिका संघर्ष शुरू होने के बाद से डॉलर के मुकाबले रुपये में लगभग 5.2% की गिरावट आई है।

डॉलर के मुकाबले रुपये के कमजोर होने के लिए जिम्मेदार कारक

घरेलू कारक

- **बढ़ता चालू खाता घाटा (CAD):** भारत के आयात और निर्यात के बीच संरचनात्मक अंतर में काफी वृद्धि हुई है। भारी ऊर्जा बिल के अलावा, अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए उच्च अंतरराष्ट्रीय कीमतों ने भारत की कुल आयात लागत को बढ़ा दिया है।
- **विदेशी पूंजी बहिर्वाह (एफआईआई और एफपीआई बिक्री):** अमेरिका में बेहतर रिटर्न उपलब्ध होने और भारतीय इक्विटी बाजारों में उच्च मूल्यांकन के साथ, एफपीआई और एफआईआई प्रमुख निवल विक्रेता बन गए हैं। जैसा कि विदेशी निवेशक भारतीय शेयरों और सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) से अरबों डॉलर निकालते हैं और पैसा वापस अमेरिका भेजते हैं, वे डॉलर खरीदने के लिए रुपये बेचते हैं, जिससे रुपये पर कमजोर होने का दबाव पड़ता है।
- **आयातक अग्रिम में डॉलर खरीद रहे हैं:** आयातित वस्तुओं और कच्चे माल पर निर्भर भारतीय कंपनियों ने मुद्रा मूल्यह्रास से खुद को बचाने के लिए अग्रिम रूप से डॉलर सुरक्षित करना शुरू कर दिया है।
- **सीमित निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता:** जबकि आईटी और फार्मा जैसे क्षेत्र कमजोर रुपये से लाभान्वित हो सकते हैं, समग्र लाभ सीमित है क्योंकि कई भारतीय निर्यात आयातित घटकों पर निर्भर करते हैं, जो अधिक महंगे हो गए हैं।
- **मुद्रास्फीति और विकास की प्रतिकूलता:** भले ही दीर्घकालिक विकास दृष्टिकोण मजबूत बना हुआ है, लेकिन धीमी निकट अवधि की जीडीपी वृद्धि और बहुत कम मुद्रास्फीति स्तर ने नकारात्मक आर्थिक संकेतकों के रूप में काम किया है, जिससे रुपये की अल्पकालिक स्थिरता में निवेशकों का विश्वास कम हो गया है।

बाहरी और वैश्विक कारक

- **भारत-अमेरिका व्यापार तनाव और शुल्क:** संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के शीर्ष व्यापारिक भागीदारों में से एक है। हालांकि, ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने से भारतीय वस्तुओं की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता गंभीर रूप से प्रभावित हुई है और बाजार जोखिम की धारणा में वृद्धि हुई है।

- **भू-राजनीतिक तनाव:** युद्ध, संघर्ष (जैसे रूस-यूक्रेन, अमेरिका-ईरान युद्ध), या वैश्विक संकट जोखिम-बंद भावना को ट्रिगर करते हैं, निवेशकों को डॉलर की ओर धकेलते हैं। मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक संघर्ष और होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास आपूर्ति-श्रृंखला की चिंताओं ने ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतों को $ 100-$ 110 प्रति बैरल के निशान से आगे धकेल दिया है।
- **कच्चे तेल की उच्च कीमतें और आयात निर्भरता:** भारत अपने कच्चे तेल का लगभग 80-85% आयात करता है, इस प्रकार, यह वैश्विक ऊर्जा स्पाइक्स के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
- **यूएसए डॉलर की मजबूती:** अमेरिकी फेड रिजर्व द्वारा दर-कटौती चक्र शुरू करने के बावजूद, अमेरिकी डॉलर ने लगातार मजबूती बनाए रखी है, जो भू-राजनीतिक अनिश्चितता की अवधि के दौरान वैश्विक आरक्षित मुद्रा और एक सुरक्षित संपत्ति के रूप में इसकी स्थिति को दर्शाता है।

मौद्रिक नीति कारक

- **US फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति:** अमेरिकी फेडरल रिजर्व का ब्याज दरें बढ़ाने का निर्णय USD-मूल्यवर्ग की संपत्ति को निवेशकों के लिए अधिक आकर्षक बनाता है। इससे भारत जैसे उभरते बाजारों से पूंजी का बहिर्वाह होता है, जिससे रुपया और कमजोर हो जाता है।
- **RBI का रुख:** RBI ने एक तटस्थ नीतिगत रुख चुना है और वर्ष 2025 के अधिकांश भाग के लिए रेपो दर को अपरिवर्तित रखा है - रुपये की आक्रामक रक्षा पर घरेलू तरलता प्रबंधन और विकास को प्राथमिकता दी गई है।

रुपये के कमजोर होने के परिणाम

उपभोक्ताओं पर प्रभाव

- **मुद्रास्फीति का दबाव (आयातित मुद्रास्फीति):** जैसे-जैसे INR कमजोर होता है, तेल विपणन कंपनियों को तेल के एक ही बैरल के लिए अधिक रुपये का भुगतान करना पड़ता है। यह बढ़ी हुई लागत अंततः पेट्रोल, डीजल और प्राकृतिक गैस की उच्च कीमतों के माध्यम से उपभोक्ताओं पर डाल दी जाती है। यह उच्च ईंधन लागत तब एक व्यापक प्रभाव को ट्रिगर करती है।
- **जीवन यापन की बढ़ती लागत:** इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना, औद्योगिक रसायन और उर्वरक जैसे अन्य प्रमुख आयातों की कीमत भी बढ़ जाती है - मुद्रास्फीति के दबाव को तेज करती है और औसत परिवार की क्रय शक्ति और बचत को कम करती है।

कॉरपोरेट्स पर प्रभाव (बाहरी ऋण)

- **ऋण चुकाने की लागत में वृद्धि:** जिन भारतीय कॉरपोरेट्स ने USD में मूल्यवान ईसीबी (ECBs) लिए हैं और अपने एक्सपोजर को पूरी तरह से हेज (hedge) नहीं किया है, उन्हें एक बड़े जोखिम का सामना करना पड़ता है। कमजोर रुपये का मतलब है कि एक कंपनी को USD-मूल्यवान ऋण के लिए अधिक INR का भुगतान करना होगा।
- **भिन्न भाग्य:** कॉरपोरेट क्षेत्र में विचलन देखा जाता है - जबकि निर्यात-उन्मुख कंपनियां अधिक मुनाफा देखती हैं, आयात-निर्भर कंपनियां और अत्यधिक कर्जदार कंपनियां महत्वपूर्ण वित्तीय तनाव का सामना करती हैं।

व्यापक आर्थिक प्रभाव

- **बिगड़ता व्यापार घाटा और भंडार पर दबाव:** आरबीआई अक्सर रुपये के अत्यधिक मूल्यह्रास को रोकने के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप (स्पॉट इंटरवेंशन) करता है। आरबीआई रुपये की अत्यधिक तरलता को अवशोषित करने के लिए यूएसडी बेचता है। हालांकि, इससे राष्ट्रीय रिजर्व बफर में कमी आती है।
- **पूंजी उड़ान:** एफपीआई और एफआईआई द्वारा धन की निकासी INR के कमजोर होने का एक कारण है। यदि रुपया कमजोर होता रहता है, तो यह अधिक व्यापक आर्थिक अस्थिरता का संकेत दे सकता है जो भारत से पूंजी पलायन की दर को बढ़ा सकता है - मूल्यह्रास का एक स्व-स्थायी चक्र बना सकता है।
- **उच्च सब्सिडी का बोझ:** आयात लागत बढ़ने पर ईंधन और उर्वरक सब्सिडी पर सरकारी खर्च तेजी से बढ़ता है, जिससे राजकोषीय घाटा बढ़ जाता है।

रुपये के कमजोर होने पर भारत कैसे प्रतिक्रिया दे रहा है

- **प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विदेशी मुद्रा हस्तक्षेप:** आरबीआई की रक्षा की पहली पंक्ति भारत के विदेशी मुद्रा भंडार से अमेरिकी डॉलर बेच रही है, जो हाल के संकट से पहले 720 अरब डॉलर से अधिक से घटकर लगभग 697 अरब डॉलर हो गई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सार्वजनिक क्षेत्र की तेल रिफाइनरों (डॉलर के सबसे बड़े खरीदार) से कहा है कि वे अपनी हाजिर बाजार खरीद पर अंकुश लगाएं और इसके बजाय एक समर्पित विदेशी मुद्रा क्रेडिट लाइन का उपयोग करें, जिससे रुपये की तत्काल मांग कम हो सके।
- **अटकलों और अस्थिरता पर अंकुश:** रुपये की गिरावट को चलाने से अत्यधिक अटकलों को रोकने के लिए, आरबीआई ने नियमों को भी कड़ा कर दिया है। इसमें अत्यधिक मुद्रा बाजार स्थिति को सीमित करने के लिए अधिकृत डीलरों की नेट ओपन पोजिशन (एनओपी) पर $ 100 मिलियन की अनिवार्य दैनिक सीमा लगाना शामिल है।
- **विदेशी पूंजी को आकर्षित करना:** डॉलर की आपूर्ति बढ़ाने के लिए, अधिकारी अधिक विदेशी निवेश आकर्षित करना चाह रहे हैं। इसमें अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) के लिए संभावित रूप से विशेष जमा योजनाओं को पुनर्जीवित करना शामिल है। पॉलिसी मेकर्स भारतीय G-Secs को Global institutional Investors के लिए और अधिक आकर्षक बनाने के लिए काम कर रहे हैं।
- **ईंधन की कीमतों में वृद्धि की अनुमति:** अपनी राजकोषीय स्थिति में सुधार के लिए, भारत ने घरेलू ईंधन की कीमतों में मामूली वृद्धि की अनुमति दी है। ईंधन की कीमतों को 110-120 डॉलर प्रति बैरल की उच्च वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों के साथ जोड़कर, सरकार का लक्ष्य सार्वजनिक तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) के सामने आने वाले नुकसान को कम करना है, जो महंगे कच्चे तेल के आयात और कमजोर रुपये से जूझ रही हैं।

आगे की राह

घरेलू समष्टि-बुनियादी सिद्धांतों को मजबूत करना

- **ऊर्जा सुरक्षा:** आक्रामक घरेलू तेल और गैस की खोज (वेदांता की $ 5 बिलियन प्रतिबद्धता), इथेनॉल सम्मिश्रण को बढ़ाना (E20 लक्ष्य हासिल करना), नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार। भारत को घरेलू अन्वेषण ब्लॉकों को प्राथमिकता देनी चाहिए और कीमतों में अस्थायी गिरावट आने पर तेल को स्टोर करने के लिए अपने रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (एसपीआर) को पूरी तरह से अनुकूलित करना चाहिए।

- **आयात निर्भरता कम करना:** आयात में कटौती के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन और पूंजीगत वस्तुओं के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना।
    - बेहतर कर जुटाने, युक्तिसंगत सब्सिडी और निर्यात विविधीकरण के माध्यम से राजकोषीय और चालू खाता घाटे को नियंत्रित करना ताकि बाहरी वित्तपोषण की जरूरतें विश्वसनीय बनी रहें।

बाहरी भेद्यता प्रबंधित करना

- **रुपया वोस्ट्रो खाते का विस्तार करना:** भारत को अपने द्विपक्षीय व्यापार तंत्र में तेजी लाने की आवश्यकता है - तेल, गैस और वस्तुओं के लिए भारतीय रुपये (INR) में भुगतान करना या रूस, यूएई और वैकल्पिक गैर-पश्चिमी ऊर्जा आपूर्तिकर्ताओं जैसे प्रमुख व्यापार भागीदारों के साथ स्थानीय मुद्रा स्वैप (currency swaps) करना।
- **यूपीआई-रुपे (UPI-RuPay) स्टैक का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** गहरे सीमा-पार भुगतान लिंक बनाने से खुदरा, पर्यटन और प्रेषण (remittance) कॉरिडोर में अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:** पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार और लचीली विनिमय दरें बनाए रखना ताकि आरबीआई अस्थिरता को सुचारू रूप से प्रबंधित कर सके और भारत की आघात-सहने की क्षमता के बारे में बाजारों को आश्वस्त कर सके, बिना अस्थिर स्तरों का बचाव किए।
- **निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता का उन्नयन:** कम-मार्जिन वाली वस्तुओं के बजाय उच्च-मूल्य विनिर्माण और सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए रसद, व्यापार सुविधा, कौशल और औद्योगिक नीति में सुधार के साथ निर्यात प्रतिस्पर्धा को अपग्रेड करना।